शब्द–ब्रह्म
E - ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 जून 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

# 'बालि वध' खंडकाव्य : मिथक का वर्तमानकालीन संदर्भ

सुश्री. वर्षा कुलकर्णी (शोधार्थी)
हिन्दी विभाग
शिवाजी विश्वविद्यालय
कोल्हापुर, महाराष्ट्र, भारत

## शोध संक्षेप

*'बालि वध' (1989 ई.) डॉ. रामकुमार वर्मा द्वारा रचित (समस्या मूलक काव्यांग) खंडकाव्य है। 'बालि वध' खंडकाव्य में रामायण में वर्णित कथा अंश को चुनकर वानरराज 'बालि' वध के प्रसंग का विवेचन किया है। महाबलशाली, वीर श्रीराम ने वानरराज बालि का वध प्रत्यक्ष युद्ध करके नहीं तो झड़ियों के बीच छिपकर किया था जिसके कारण मरते वक्त बालि ने राम को 'व्याध' कहा। आदर्श की प्रतिमूर्ति श्रीराम ने बालि वध प्रसंग में ऐसा निर्णय क्यों लिया। यह संदर्भ समस्त भाषाओं में लिखे रामायण में मिलता है। किन्तु कवि ने 'बालि वध' खंडकाव्य के माध्यम से स्वयं श्रीराम के वचनों के माध्यम से बालि वध के कारणों का स्पष्टीकरण देते हुए राम की दूरदृष्टि, योग्य नीति और आदर्श प्रजाहितदक्ष राजा की प्रतिमा को अबाधित रखा है। कवि ने अतीत के इस प्रसंग से वर्तमान को भी दुराचार के विरुद्ध लड़ने के लिए प्रेरित किया है। राम जैसी न्याय क्षमता, दूरदृष्टि वर्तमान समय के प्रशासनिक अधिकारियों में भी जागृत होनी चाहिए जिससे असत्य को न्याय देते वक्त सत्य के साथ अन्याय नहीं होगा।*

## भूमिका

छायावाद युग के अंतिम चरण के कवियों में डॉ. रामकुमार वर्मा जी का नाम अग्रगण्य है। वे इतिहासकर के रूप में भी ख्यात हैं। उनकी 'वीर हम्मीर', 'चित्तौड़ की चिता', 'कुल ललना', 'निशीथ', 'एकलव्य' आदि रचनाएँ उल्लेखनीय हैं। उन्होंने अपनी आरंभिक रचनाओं में कल्पना को प्रधानता दी है, किंतु परवर्ती कृतियों में अनुभूति को अधिक महत्व दिया गया है। वर्मा जी के काव्य में प्रकृति प्रेम, रहस्यवाद, वेदना, निराशा तथा समाज की विशेष अपेक्षा न रखानेवाला व्यक्तिवाद आदि प्रवृत्तियाँ भी मिलती हैं। आज के इस आधुनिक दौर में मिथक का प्रयोग कर सर्जक हमें उस विचार या चिंतन की ओर ले जाना चाहते हैं जो चिंतन या विचार किसी सामान्य नायक को केंद्र में रखकर हम पर प्रभाव नहीं छोड़ सकते। 'बालि वध' मिथकीय खंडकाव्य के माध्यम से कवि रामकुमार वर्मा ने आज के परिवेश को केंद्र में रखकर एक मौलिक विचार सामने रखने की कोशिश की है।

वाल्मीकि कृति रामायण के 'किष्किन्धा कांड' के एक प्रसंग में बालि और सुग्रीव के द्वन्द्व में सुग्रीव पर जब वज्राघात हुआ था तब शक्तिशाली श्रीराम ने 'विटप ओट' से कापियों के राजा बालि का वध किया और छिपकर वध करने के कारण बालि द्वारा 'व्याध' कह कर उन्हें लांछित किया गया। एक आदर्श राजा - योद्धा होकर भी आयोध्यापति राम ने 'विटप ओट' से छिपकर बालि वध क्यों किया ? इस प्रश्न का उत्तर वाल्मीकि रामायण से लेकर अन्य भाषा में लिखे गए रामायण में लगभग एक जैसा ही मिलता है। वानर राज बालि ने अपने छोटे भाई सुग्रीव की

शब्द–ब्रह्म
E - ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 जून 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

पत्नी रुमा के साथ जो दुर्व्यवहार किया, वह धर्म के विरुद्ध है। पुत्री, बहन, पुत्र-वधू, छोटे भाई की पत्नी ये सब एक पुरुष के लिए समस्थानीय होती है, परंतु बालि ने रूमा को जबरदस्ती अपनाने की कोशिश कर अधर्म ही किया था। ऐसे अधर्मी को राजा द्वारा मृत्यु से उचित दूसरा क्या दंड हो सकता है ? इसी आशय का वर्णन सभी राम कथानकों में 'बालि' वध प्रसंग में मिलते है। किन्तु कवि रामकुमार वर्मा द्वारा रचित 'बालि वध' (1989 ई.) एक अलग दृष्टिकोण को सामने लाता है। रामकथा के इस प्रसंग में डॉ. वर्मा ने आधुनिक सामाजिक नैतिकता के प्रश्न को अलग ढंग से सुलझाने का प्रयत्न किया है।

'मिथक' संकल्पना

मिथक अंग्रेजी के 'मिथ' शब्द का हिंदी पर्याय है और अंग्रेजी का 'मिथ' शब्द यूनानी शब्द 'माइथॉस' से व्युत्पन्न है जिसका अर्थ है 'आप्तवचन' या 'अतर्क्यकथन'। हिंदी में मिथ के लिए 'कल्पकथा', 'पुराणकथा' आदि शब्दों का भी प्रयोग हुआ है, किंतु आधुनिक काल में 'मिथक' शब्द ही रुढ़ हो गया है। वस्तुत: प्रागैतिहासिक घटनाएँ जिनकी सत्यता के बारे में कुछ ठोस आधार नहीं मिलते या उनके घटित होने पर आशंकाएँ उपस्थित होती हैं। वे सभी घटनाएँ 'मिथक' मानी जाती हैं। किंतु मिथक वह कड़ी है जो हमें अपने अतीत से,संस्कृति से और संस्कारों से जोड़कर रखती है। प्राचीन काल में घटित ये पुराण कथाएँ अपनी सांस्कृतिक धरोहर के कारण किसी ठोस आधार के बावजूद भी वर्तमान में अपना महत्व सिद्ध करती आई है। बृहत हिन्दी कोश में 'मिथक' का एक अलग अर्थ इस प्रकार दिया है, "प्राचीन पुराणकथाओं का तत्व जो नवीन स्थितियों में नये अर्थ का वहन करें।"[1] आधुनिक काल में भी प्राचीन पुराकथाओं को चुनकर साहित्यकार उनके समय के उस वर्तमान को आज के वर्तमान से जोडकर एक नया अर्थ सामने लाने की कोशिश करते हैं और अपनी इस कोशिश में वे मिथक की एक नई अर्थ सत्ता, एक नई संकल्पना बना जाते हैं।

'बालि वध' खंडकाव्य : मिथक का वर्तमानकालीन संदर्भ

डॉ. रामकुमार वर्मा कृत 'बालि वध' खंडकाव्य का मूल उद्देश्य बालि द्वारा श्रीराम पर 'व्याध' कह कर लगाए गए लांछन को मिटाकर राम के सत्य को उद्घटित करना रहा है। इसलिए राम को ही केंद्र में रखकर, राम के ही द्वारा 'बालि' वध के कारणों का स्पष्टीकरण प्रस्तुत काव्य में किया गया है। आज के आधुनिक वैज्ञानिक युग में साहित्य में पौराणिक,मिथकीय कथा को चुनना कइयों को अखरता है। प्रत्येक सर्जक मिथकीय कथानक संदर्भ या पात्र द्वारा अपने परिवेश को दिखाने की कोशिश करता है। जो कथानक सामान्य जन-मानस के मन पर अपनी छाप छोड गया है उसी कथानक को लेकर यदि विचार प्रस्तुत किए जाएँ तो वे विचार या लेखक की अपनी बात स्वीकारना पाठक के लिए आसान होता है। डॉ. मनोरमा मिश्र के मतानुसार, "मानवीय प्रवृत्तियों को जानने-पहचानने तथा सत्य को तर्क संगत निष्कर्ष तक पहुँचाने का कार्य इसी पौराणिक प्रवृत्ति को रहा है।"[2] स्पष्ट है कि यह पौराणिक प्रसंग आज भी हमारे विचारों को प्रस्तुत करने में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं। वाल्मीकि कृत रामायण का तो हर एक प्रसंग आज के समाज के लिए एक आदर्श स्थापित करने की क्षमता रखता है। नरेंद्र कोहली ने अपने 'पौराणिक लेखन की प्रासंगिकता' लेख में कहा है, "यदि समस्त राम कथाओं का क्रमिक

समाजशास्त्रीय अध्ययन किया जाए तो सुविधा से इस देश की सामाजिक नैतिकता का इतिहास प्रस्तुत किया जा सकता है।"[3]

राम के 'बालि' वध के पीछे निम्न कारण बताए जाते हैं - बालि ने अपने भाई सुग्रीव की पत्नी रुमा के साथ दुर्व्यवहार किया, जो धर्म के पूर्णत: विरुद्ध था और राम के सुग्रीव के साथ रहे मित्रता पूर्ण संबंध। इन कारणों से तो सभी अवगत है, परंतु बालि से प्रत्यक्ष युद्ध न कर उसे 'विटप ओट' (झाड़ियों की आड़ से) से छिपकर मारने के जो कारण श्रीराम ने प्रस्तुत किये हैं वह उनकी दूरदृष्टि और युक्ति-पूर्ण नीति के ही सूचक हैं। जो कवि रामकुमार वर्मा ने बहुत ही मार्मिक शब्दों में व्यक्त किए है।

राम द्वारा किए बालि वध के बाद वानर सेना को जिज्ञासा है कि, क्षत्रीय कुल के शक्तिशाली वीर श्री राम ने बालि के साथ प्रत्यक्ष युद्ध न करके उसे छिपकर क्यों मारा। वानरों की इस सशंक मन: स्थिति को समझकर श्रीराम अपनी योग्य भूमिका का परिचय देते हैं। राम ने शीघ्रता से 'बालि' का वध किया। उसके पीछे कारण भी गंभीर था। सीता को रावण की कैद से मुक्त करने के लिए राम के पास समय कम था। वनवास की अवधि समाप्त होने में बस चार मास का समय शेष था। इतनी कम अवधि में राम को रावण ने सीता को कहाँ छिपाकर रखा है, इसका पता लगाना था और उसके साथ युद्ध करके सीता को मुक्त करना था। कवि ने राम के सशंक मन:स्थिति को इस प्रकार व्यक्त किया है-

"दक्षिण दिशा में दुष्ट ले गया है सीता को
राजधानी लंका में या अन्य किसी स्थान में
सीता को छिपा के रख सकता है चोरी से
मंडलिक मणि हो के अपने किसी मण्डल में।" [4]

रावण जैसे महान शक्तिशाली योद्धा ने विश्व वश में कर लिया है। देव, यक्ष, किन्नर सब उसके दास हैं। ऐसे बलशाली रावण से युद्ध करने के लिए राम को किसी के साथ की आवश्यकता थी। राम का साथ देने के लिए सुग्रीव थे पर उसके चार मंत्रियों के साथ रावण की बलशाली सेना से लड़ना असंभव था। इन परिस्थियों में भी यदि राम 'बालि' को युद्ध के लिए ललकारते तो यह निश्चित ही था कि युद्ध में जीत हासिल करने के लिए अभिमानी बालि पूरी वानर सेना को समाविष्ट करता। इस प्रसंग में राम को सर्व प्रथम वानर सेना से लड़ना पड़ता और तब बालि से युद्ध होता। विजय तो श्रीराम की ही होती पर इस युद्ध में पूरी वानर सेना का अंत निश्चित था। तब सीता की खोज करने और रावण से युद्ध करने के लिए श्रीराम की मदद करनेवाले सुग्रीव के पास सेना नहीं रहेगी। इन बातों पर राम ने पहले ही विचार किया था। कवि रामकुमार वर्मा ने राम की दूरदृष्टि को इन पंक्तियों में बद्ध किया है-

"मित्र सुग्रीव - हित - चिंतक अब मेरे हैं
सीता की करेंगे खोज वानरों को साथ ले
यदि तुम सब कट - मरते संग्राम में
खोज कर पाते श्री सुग्रीव क्या अकेले ही।" [5]

श्रीराम बालि से युद्ध करते तो उस युद्ध में अनेक दिन व्यतीत हो जाते। फिर सीता की मुक्ति के लिए रावण से लंबा युद्ध करना पड़ता और राम के पास इतना समय नहीं था। राम को रावण की कैद में फंसी प्राणप्रिय सीता के प्राणों की चिंता हो रही थी। वे रावण की कैद में एक-एक क्षण वियोग में व्यतीत कर कैसे जीवित रह सकेगी इस विचार से ही राम अस्वस्थ हो उठते हैं। उनकी अस्वस्थता और पत्नी सीता के प्रति चिंता को कवि ने इस प्रकार व्यक्त किया है-

शब्द–ब्रह्म
E - ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 जून 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

"एक क्षण का वियोग जिसको असह्य
वह सती - सीता कैसे रावण की लंका में
जीवित रहेगी मुझे यही एक चिंता है,
उसके उद्धार हेतु शीघ्र ही प्रयत्न हो।"[6]

राम को केवल पत्नी सीता की ही चिंता नहीं थी तो अपने छोटे भाई भरत की भी चिंता उन्हें सता रही थी। चित्रकूट प्रसंग में भरत ने भ्राता राम से कहा था, वनवास की अवधि समाप्त होने पर भी आप नहीं लौटे तो मैं आत्मदाह करूंगा। भरत के कहे ये शब्द याद आते ही श्रीराम विचलित हो जाते हैं। यदि मित्र सुग्रीव के प्राण बचाने के किए श्रीराम, बालि से युद्ध करते तो, रावण से युद्ध कर सीता को मुक्त करके, वनवास की अवधि समाप्त होते ही भरत से मिलने आयोध्य लौटना कदापि संभव नहीं था। और रही छिप कर वार करने की बात, तो बालि जानता था कि सुग्रीव के साथ वहाँ राम थे। इसलिए बालि द्वारा 'व्याध' कहनेवाली बात राम को व्यर्थ लगती है। राम कहते हैं-

व्याध तो वह है कि जो छिपकर करे अघात
सदा हिंसा ही कर जो, दिवस हो या रात
व्याध मैं कैसे हुआ जब था उसे यह ज्ञान
हो गई मेरी यहाँ सुग्रीव से पहिचान।"[7]

श्रीराम ने बालि का वध करके युक्तिपूर्ण नीति से मित्र सुग्रीव, पत्नी सीता तथा भाई भरत के प्राणों की रक्षा करके अपना प्रण तो निभाया ही और साथ ही में वानर सेना को भी भीषण रक्तपात से बचाया। बालि का वध करना श्रीराम का एक योग्य निर्णय था। इसका स्पष्टीकरण स्वयं राम के ही अर्थपूर्ण वाणी से करते हुए कवि ने सत्य को सामने लाने की कोशिश की है। इस खंडकाव्य में आदि से अंत तक राम की युक्तिपूर्ण नीति से निभायी गई योग्य भूमिका के ही दर्शन होते हैं-

इसलिए मेरी इस युक्ति पूर्ण नीति से
तीन व्यक्तियों के प्राणों की सुरक्षा हो गयी
मित्र सुग्रीव, सीता और भरत भाई की
प्रण मेरा था जो मैंने नीति से निभाया है।"[8]

"मिथक अतीत की नयी यात्रा है जो हमारे आधुनिक जीवन में शामिल है।" [9] आधुनिक काल में पौराणिक कथाओं को लेकर जो साहित्य सृजन हो रहा है, उनका उद्देश्य है अतीत की कथाओं के माध्यम से आज के जीवन मूल्यों तथा चिंतन को प्रस्तुत करना । कवि रामकुमार वर्मा ने मिथकीय कथानक का आधार लेकर 'बालि वध' खंडकाव्य के माध्यम से स्त्रियों पर होने वाले अत्याचारों के खिलाफ सही नीति बनाने की बात कही है।

## निष्कर्ष

हम कह सकते हैं कि 'बालि वध' खंडकाव्य में कवि ने राम के द्वारा झाड़ियों की आड़ से दुराचारी बालि के वध का प्रसंग उठाकर राम की दूरदृष्टि, युक्ति पूर्ण नीति एवं योग्य न्याय को दर्शाने का प्रयास किया है। प्रभु श्रीराम का नाम लेते ही हमारे समक्ष एक अलौकिक पुरुष और एक आदर्श राजा की प्रतिमा सामने प्र कट होती है। किन्तु परिस्थितियों का गांभीर्य जानकार श्रीराम ने बालि वध प्रसंग में युक्तिपूर्ण नीति का अवलंब कर अपनी योग्यता को ही प्रस्तुत किया है ना कि अपने दौर्बल्य को।

## संदर्भ ग्रन्थ

*1 संपा. कलिका प्रसाद, बृहत हिंदी कोश (वाराणसी, ज्ञानमंडल लिमिटेड : पुनर्मुद्रित संस्करण 2000 ई.) पृष्ठ 894*

*2 डॉ. मनोरमा मिश्र, मिथकीय चेतना समकालीन संदर्भ (नई दिल्ली, वाणी प्रकाशन : 2007 ई.) पृष्ठ 15*

*3 संपा. कल्याणमल लोढ़ा, मिथक और भाषा (कलकत्ता, हिंदी पुस्तक एजंसी : 1981 ई.) पृष्ठ 138*

*4 डॉ. रामकुमार वर्मा, बालि वध (इलाहबाद, साहित्य भवन प्रा. लि. : 1989 ई.) पृष्ठ 35*

*5 वही, पृष्ठ 40*

*6 वही, पृष्ठ 43*

*7 वही, पृष्ठ 28*

*8 वही, पृष्ठ 46*

*9 डॉ. शम्भुनाथ, मिथक और आधुनिक कविता (नई दिल्ली, नेशनल पब्लिशिंग हाउस : 1985 ई.) पृष्ठ 27*